Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

डॉ. रामकुमार वर्मा की नाटय यात्रा:

डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर

प्रवक्ता, हिन्दी,श्री मलखानसिंह महाविद्यालय ठूलई, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22092489

सारांश

राम कुमार वर्मा हिंदी साहित्य के प्रमुख नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में विशेष पहचान रखते हैं। उनकी नाट्य-यात्रा हिंदी नाट्य-साहित्य के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। उन्होंने ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयों को आधार बनाकर नाटकीय संवेदना को समृद्ध किया। उनके नाटकों में भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति गहरी आस्था के साथ मानवीय मनोविज्ञान, प्रेम, त्याग, कर्तव्य, संघर्ष और नैतिक मूल्यों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति मिलती है। विशेष रूप से हिंदी एकांकी के विकास और उसे साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान करने में उनका योगदान उल्लेखनीय माना जाता है। उनके नाट्य-साहित्य में कथानक की संक्षिप्तता, चरित्र-चित्रण, संवादों की प्रभावशीलता, मंचीयता तथा भावात्मकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। उनकी नाट्य-दृष्टि केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को भी अभिव्यक्त करती है। प्रस्तुत अध्ययन में राम कुमार वर्मा की नाट्य-यात्रा के विभिन्न चरणों, प्रमुख नाट्य-कृतियों, विषय-वस्तु, चरित्र-योजना, संवाद-शैली, भाषा-शिल्प तथा ऐतिहासिक एवं सामाजिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। इस दृष्टि से उनकी नाट्य-यात्रा हिंदी रंगमंच और साहित्य दोनों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करती है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 10-05-2026
- **Accepted:** 26-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**4(6); 2026: 285-287
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सेंगर. क. स. रामकुमार वर्मा की नाट्य यात्रा: Indian J Mod Res Rev. 2026;4(6):285-287.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मूल शब्द: राम कुमार वर्मा, नाट्य-यात्रा, हिंदी नाटक, एकांकी, हिंदी एकांकी, नाट्य-साहित्य, ऐतिहासिक नाटक, पौराणिक नाटक, सामाजिक नाटक, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना, चरित्र-चित्रण, संवाद-शैली, नाट्य-शिल्प, मंचीयता, मनोवैज्ञानिक दृष्टि।

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि डॉ. रामकुमार वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी है । उन्होंने रचनाकार के रूप में सर्वप्रथम कविता का ही सृजन किया है। कवि भी वे छायावादी संस्कारों के रहे। उनकी रचना का मुख्य स्वर प्रकृति का सौंदर्य और रहस्यवाद ही रहा है। अपने कवि व्यक्तित्व को वर्मा जी ने सौंदर्य बोध से बाँधकर अभिव्यक्ति की कला तथा वह समस्त दिशाओं को प्राप्त कर लेने का प्रयास किया, जिससे वे सत्य और सुन्दर को साहित्य की समसत विधाओं में प्रकट कर सकें। कविता के बाद वर्मा जी का नाट्य लेखन को इसी परिपक्ष्य में देखा जाना चाहिए। वर्मा जी का रचना युग सांस्कृति एवं सामाजिक संक्रमण का युग था। बदलते मानव मूल्यों और युगीन परिस्थियों में उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम भी बदला। यह एक बड़ा सच है कि संवेदना को सबसे अधिक नाटक में ही व्यक्त और सम्प्रेषित किया जा सकता है।

आधुनिक साहित्य में नाटक वह प्रमुख विधा है जिसने अपने श्रव्य और दृश्य विधान से जनमानस को सर्वाधिक आकृष्ट एवं प्रभावित किया है। डॉ0 वर्मा से पूर्व हिन्दी नाटकों की एक सुदीर्घकालिक परम्परा (भारतेन्दु से लेकर जयशंकर प्रसाद तक) चली आ रही थी और ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक नाटकों ने धूम मचा रखी थी। अतः स्वभाविक थ कि डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी नाट्य क्षेत्र में कुछ अभिनव प्रयोग करने आते और वे आये भी। उन्होंने इतिहास और संस्कृति से वह अनाद्घाटित पक्षों को उठाया जो प्राय उपेक्षणीय थे। यद्वपि इस महनीय कार्य को सम्पादित करने में उन्हें सर्वाधिक संघष भी करता पड़ा। परन्तु वर्मा जी ने संघर्ष से घवराना कब सीखा था? संघर्ष और चुनौतियों को स्वीकारना उनका शौक था। अपनी नाट्य प्रक्रिया के दौरान वर्मा जी को खट्टे-मीठे दोनों प्रकारों के अनुभव हुए। अपने अनुभवों के सन्दर्भ में वर्मा जी ने लिख है- ''जब नाटक लिखने की बात मेरे मन में पहल जागी तो लोगों ने उसका परिहास किया। मेरे पात्रों के संभाषणों को विकृत स्वर में पढ़कर मेरे मित्रों ने मेरे उत्साह के अंकुरों को अपनी असभ्य आलोचनों के तेज नाखूनों से नौचा और जमीन पर सूखने के लिए छोड़ दिया, लेकिन वे अंकुर सूखे नहीं क्योंकि उनके केशों में संस्कारों का रस था वह शक्तिशालिनी जड़ों से सींचा गया था।''

आधुनिक हिन्दी साहित्यों में डॉ. रामकुमार वर्मा का व्यक्तित्व नाटककार के रूप में सर्वाधिक उभर कर आया है। उन्होंने अपनी प्रतिभा और कौशल का जिस शक्तिशाली ढ़ंग से इस विधा में प्रवर्तन और प्रदर्शन किया है उतना किसी अन्य विधा में नही किया। दूसरी बात यह कि प्रचुर मात्रा में वर्मा जी ने नाटस सृजन किया है और तीसरे यह कि नाटकों के क्षेत्र में उनके द्वारा कला एवं तकनीक के अभिनय प्रयोग हुए है। अपने प्रौढ़ लेखन कालमेंतो वे नाटक के पर्याप्त ही बन गये हैं। वर्मा जी के नाटक साहित्य का अवलोकन करने के उपरान्त यही कहा जा सकता है कि वर्मा जी के नाट्य लेखन में सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व पूर्ण पहचान के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

डॉ. वर्मा का नाट्य काल द्विवेदी युगीन मर्यादा और अनुशासन का रहा है, जिसमें उपन्यास और नाटक जैसी विधाओं को हेय दृष्टि से देखा जाता था और इसमे भाग लेने वाले पात्रों को गुण्डा अथवा आवारा समझा जाता था। स्वभाविक हे कि स्त्री पात्रों के अभिनय हेतु स्त्रियों का प्रायः अभाव रहता था। पुरूष ही स्त्री वेश धारण कर अभिनय करते थे। स्वयं वर्मा जी ने कई पात्रों का कुशल अभिनय कर अपने कलाकार होने का भी परिचय दिया है। वस्तुतः नाटक रंगमंचीय विधा है। रंगमंचीय के लिए जितनी पहचान वर्मा जी के नाटकों में है अन्यत्र दुर्लभ दिखलायी पड़ती है।

डॉ. वर्मा जी मूलतः प्रसाद युगीन स्वच्छन्दतावादी नाटककार है। प्रसाद युग से ही उनकी नाटक की यात्रा प्रारम्भ हुई है। अतः उनके चरित्रों में दया, करूणा, प्रेम, वीरता, उदारता, सहानूभूति आदि-आदि गुणों का होना स्वभाविक है। वर्मा जी के नाटकीय चरित्र दर असल श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के प्रतीक है। जो अपने आदर्शों को प्रस्तुत कर वस्तुतः समाज और राष्ट्र को विकास की ओर ले जाते हैं। राष्ट्र एवं समाज के उत्थान हेतु मानव की सक्रिय भूमिका वर्मा जी का लक्ष्य भी कहा जा सकता है। उनके कई सामाजिक नाटक में नाना प्रकार की विसंगतियों को लक्ष्य कर उनका विश्लेषण और समाधन भी नाटककार ने प्रस्तुत किया है। परन्तु वर्मा जी का मन सर्वाधिक ऐतिहासिक और पौराणिक नाटक को लिखने में लगा है। उनका स्वयं का अभिमत इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है-''एक तो राष्ट्रकी संस्कृति में मेरा विश्वास है जिसका विकास करने में हमारे ऐतिहासिक तथ्य के निरूपण से हमारे वर्तमान जीवन को एक नैतिक धरातल मिलता है।'' स्पष्ट है कि डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने सभी प्रमुख नाटकों में राष्ट्रीय, संस्कृतिक गौरव एवं मानवतावादी दृष्टिकोण को व्यक्त किया है।

डॉ. राजकुमार वर्मा माननीय श्रेष्ठा के सर्जन एवं उदघोषक है। इसीलिए उन्होनें अतीत के इतिहास से ऐसे श्रेष्ठ चरित्रों का चयन कर अपने नाटकों का सृजन किया जिन्होंने राष्ट्र एवं समाज के समक्ष मानवीय श्रेष्ठता का आदर्श प्रस्तुत किया है। इस प्रकार के नाटकों में कौमुदीमहोत्सव, अगिनशिखा, विजय पर्व, जय आदित्य, संत तुलसीदास, जय वर्धमान तथा शिवाजी आदि-आदि प्रमुख नाटक हैं। मानवीय श्रेष्ठता के महत्व को स्थापित करते हुए डॉ. राजकुमार वर्मा लिखते हैं-''मनुष्य का एक ही पद है और वह है मानवता के सोपान परी प्रतिष्ठित होना।.....पद का महत्व कार्य से है इसलिए उनके मातानुसार श्रेष्ठ कार्य करने वाला ही वरेण्य एवं महत्वपूर्ण है।'' इसलिये उनके मतानुसार श्रेष्ठ कार्य करने वाला ही वरेण्य एवं महत्वपूर्ण है।''

डॉ. रामकुमार वर्मा की नाटक यात्रा एक सोद्देश्यपरक यात्रा मानी जा सकती है। उनके नाटकों का मूलाधार सांस्कृतिक चेतना है। आज संस्कृति के प्रति वर्मा जी की अटूट आस्था है। यही कारण है कि उनके लगभग सभी नाटकों में इतिहास के संस्कृति का वैभव परिलक्षित होता है। भारतीय संस्कृति के गौरवशाली इतिहास का स्मरण करना उनका युगधर्म रहा है। क्योंकि ब्रिटिश काल में भारतीय युवाओं पर पाश्चात्य का ऐसा रंग चढ़ रहा था कि वह अपनी संस्कृति से ही विमुख होने लगे थे। अतः एक जागरूक और राष्ट्रवादी और राष्ट्रवादी लेखक का दायित्व बनता है कि वह अपने देश की भावी पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करे। अतः उसी गुण-धर्म-प्रधान स्वर्ग की ओर अर्थात प्रेम से श्रेय की ओर नैतिक दायित्व रहा है।'' इस महनीय दायित्व के निर्वाह हेतु डा0 रामकुमार वर्मा ने इतिहास और अनन्तः भारतीय संस्कृति के बिखरे हुए टूटे हुए तन्तुओं-अवयवों को एक साथ जोड़कर अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए भारतीय संस्कृति के आदर्श रूप् का ही वरेण्य किया है।

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निष्कर्ष

वर्मा जी के नाटकों में जो युग बोध अभिव्यक्त हुआ है वह अत्यन्त ही सजीव, सरस और प्रमाणिक तथा विश्वसनीय है। यही कारण है कि डॉ. वर्मा के नाटकों इतिहास, संस्कृति के साथ-साथ युगीन धड़कने भी सुनी जा सकती हैं। पृथ्वीराज की आँखे, शिवाजी, उपसर्ग, नाना फडनवीस, अशोक तथा बापू आदि-आदि नाटकों में अतीत के साथ वर्तमान समाज की विसंगतियों का भी यर्थात चित्रण सम्भव हो सका है। अस्तु प्रमाण के बाद वर्मा जी एक ऐसे नाटककार हैं जिन्होनें बदले सामाजिक परिपेक्ष्य में भारतीय आदर्शो को पुनः स्थापित किया है। अस्तु, डॉ. रामकुमार वर्मा की नाटक यात्रा विविध रंगों से रंगी हुई है। वह सब रंगीनिया श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की प्रतीक हैं।

संदर्भ सूची

1. वर्मा RK. राम कुमार वर्मा ग्रंथावली. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.
2. वर्मा RK. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. प्रयागराज: साहित्य भवन.
3. वर्मा RK. साहित्य समालोचना. प्रयागराज: साहित्य भवन.
4. शुक्ल R. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
5. द्विवेदी HP. हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. सिंह N. छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
7. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
8. वाजपेयी N. हिंदी साहित्य: बीसवीं शताब्दी. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
9. शर्मा RV. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
10. सिंह B. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.
11. भटनागर RS. हिंदी नाटक: उद्भव और विकास. नई दिल्ली: संबंधित साहित्यिक प्रकाशन.
12. तिवारी R. हिंदी का गद्य साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर श्री मलखान सिंह महाविद्यालय, ठूलई (हाथरस), उत्तर प्रदेश में हिन्दी विषय के प्रवक्ता हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियाँ हिन्दी साहित्य, साहित्यिक आलोचना तथा हिन्दी भाषा के अध्ययन से संबंधित हैं। वे हिन्दी साहित्य के विभिन्न आयामों पर अध्ययन एवं शोध कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

© 2026 डॉ. कर्मेन्द्र सिंह सेंगर. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/